ओ३म्

* पौराणिकों से प्रश्न *

जिन्हें

आर्य्यावर्त्त पत्र से उद्धृत करके

पं० मुकन्दराम शर्म्मा उपदेशक ने

बा० सुखदेवदास जी डाक्टर

सिटी हौस्पिटल भरतपुर

की प्रेरणा से

वैदिकयन्त्रालय अजमेर में छपवाकर

प्रकाशित किया

सन् १९०३ ई०

प्रथमबार १०००

डॉ० भवानीलाल भारतीय पुस्तकालय

संख्या

तिथि

मुफ्त बांटने वालों को १) सैकड़ा

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर ..... 2902 ....
पु. परिग्रहण क्रम ....

3607
प-पु-१९५

निवेदन ।

प्यारे पाठकगण ! यह अट्ठाईस प्रश्न आर्य्यावर्त्त पत्र में पं० इन्द्रदत्त जी उपदेशक ने छपवाये थे और जब यह आर्य्य भाइ[illegible] सुनाये गये तो इस प्रकार के प्रश्न छाप कर बांटने योग्य समझकर बा० सुखदेवदास जी ने ५०० जिल्द मुफ्त बांटने के लिये छपवाने की प्रेरणा की इस कारण यह प्रश्न ऐसे स्थान के लिये जहां पौराणिक वृथा कोलाहल करते हैं बांटना बहुत ही लाभदायक होगा, अधिक भी प्रचारार्थ छपवाये ।

सेवक—

मुकुन्दराम

[illegible] जानन्द दण्डी
[illegible]
परिग्रहण क्रमांक २१०९
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

ओ३म्

* पौराणिकों से प्रश्न *

(१) यज्ञ करना धर्म्म है वा नहीं ? तथा समस्त हिन्दू इस यज्ञ कर्म्म को वेद प्रतिपादित मानते हैं वा नहीं यदि वेद प्रतिपादित है तो इसका फल भी उत्तम होगा। यदि उत्तम है तो राजा बलि को उत्तम कर्म्म करते हुवे पाताल को क्यों जाना पड़ा ?

(२) छली कपटी को पापी कहोगे या नहीं ? और ऐसा कहना मनुधर्म्मानुसार धर्म्म विरुद्ध मानते हो या नहीं ? यदि पाप और धर्म्म विरुद्ध है तो आप के वामन जी ने छल और श्रीकृष्ण जी ने माखनचोरी आदि क्यों की ? जिसकी पुष्टि गोपालसहस्रनाम में " चोरजार-शिखामणिः ,, कहकर की है ॥

(३) ब्रह्मा, विष्णु और शिव आप के मतानुसार

तीनों ईश्वर हैं या नहीं ? यदि हैं तो शिव रूप ईश्वर ने ब्रह्मा रूप ईश्वर के मिथ्याभाषण पर ब्रह्मा की पूजा संसार से क्यों उठादी ?

(४) गणेश जी का शिरश्छेद आप शनैश्चर की दृष्टि से या महादेव जी के काटने से मानते हो, दोनों बातों में कौन सत्य है ?

(५) रामचन्द्र जी ईश्वर थे या नहीं ? यदि थे तो सन्ध्योपासन में प्रार्थना किसकी करते थे जैसा कि तुलसी कृत रामायण में लिखा है कि:—

चौपाई

बिगत दिवस मुनि आयसु पाई, सन्ध्या करन चले दोऊ भाई॥
नित्य क्रिया कर गुरुपै आये, चरणसरोज सुभग शिरनाये॥

यदि ईश्वर नहीं थे तो हमारा पक्ष सिद्ध हुवा। और सब पौराणिक रामचन्द्र जी को "मर्य्यादापुरुषोत्तम" क्यों कहते हैं इसका अभिप्राय क्या है ? तथा लक्ष्मण जी के शक्ति लगने पर दुःख से व्याकुल होकर यह क्यों कहा कि:—"जो जड़ दैव जियावइ मोही,, वह कौनसा दूसरा ईश्वर था जो उन्हे उस विपत्ति में भी जिलाता था ?

(६) वेदों में किस धातु और कितनी लम्बी चौड़ी मूर्त्ति बनाने का विधान है ?

(७) चन्द्रमा को अपने गुरु बृहस्पति की स्त्री, इन्द्र को गौतम की स्त्री अहल्या और ब्रह्मा को अपनी पुत्री के साथ की कथा सत्य है या असत्य ?

(८) अपने ३३००००००० तेंतीस करोड़ देवता और उनकी स्त्री पुत्र और पुत्रियों के नाम अलग २ बता ओ और यह भी बताओ कि उन का रूप कैसा तथा वाहन क्या और निवास स्थान कहां है ? ॥

(९) श्री कृष्ण जी की १६००० सोलह हज़ार रानी पट रानियों के नाम लिखो और यह भी लिखो कि उन के पौत्र प्रपौत्र किस समय हुवे थे ?

(१०) जलन्धर जब शिव जी से लड़ाई में न मरा तब भगवान् को उसकी स्त्री वृन्दा का पातिव्रत्य धर्म्म नष्ट करना पड़ा, जिससे वह मरा । अब कृपापूर्वक अपने हृदय पर हाथ धरके बताइये कि क्या ईश्वर जो सर्वशक्तिमान् और सत्य है उसके येही गुण हैं ?

(११) महादेव जी को तुम ईश्वर मानते हो या

नहीं ? यदि मानते हो तो कहो वे अपने गणेश को क्यों नहीं जान सके और उसके शिर का पूरा पता न लगा सके क्या ईश्वर ऐसा हो सकता है। क्या तुम उन्हें अल्पज्ञ और शक्तिहीन नहीं कहोगे ?

(१२) जगन्नाथ की पुरी पवित्र है या मूर्त्ति ? यदि मूर्त्ति पवित्र है तो यहां पैठ कर सब के साथ भोजन क्यों नहीं करते ? यदि कहो कि पुरी पवित्र है तो वहां का जूठा भात यहां सब को क्यों खिलाते हो ? ॥

(१३) भागवत के इस वचन को मानते हो या नहीं ?

यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके ।
स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः ॥
यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेन कर्हिचित् ।
जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥
भागवत द० स्कं० अ० ८७ श्लो० १३

(अर्थ) जो कफ वात पित्त के बने शरीर में परमात्मबुद्धि स्त्रीपुत्रादि में मेरा मेरी ऐसी बुद्धि पृथ्वी धातु आदि के बने पदार्थों में पूज्य बुद्धि और जल में तीर्थ बुद्धि रखता है वह ज्ञानी मनुष्यों में खर (गधे) के समान है।

इस श्लोक पर या तो हस्ताल फोरिये या प्रतिमा पूजा से हाथ धो बैठिये। कहिये दो में से कौन बात करोगे ? ॥

(१४) जब नृसिंह जी आप के ईश्वर हैं तब वीरभद्र ने शरभ पक्षी का रूप धरके उन्हें क्यों मारडाला ? ॥ लिङ्गपुराण ॥

(१५) कोतवालेश्वर, लोधेश्वर, बलखण्डेश्वर, खेरेश्वर, बूढ़ाबाबू, ग़ाज़ीमियां आदि की पूजा कौन से पुराण में है ?

(१६) अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

(अर्थ) अकालमृत्यु हरने वाला सब रोगों का नाश करने वाला, विष्णु का चरणामृत पीकर फिर मनुष्य जन्म नहीं लेता ॥ यदि आप का विश्वास इस श्लोक पर है तो फिर जो पादोदक पीकर दूसरा जन्म नहीं लेता है उस्का श्राद्ध करने की क्या आवश्यकता है ? ॥

(१७) ब्रह्मा के मुख ४ थे या ५ ?। यदि कहो कि ५ थे तो लिङ्ग पुराण के अ० ९६ श्लो० ३१ में केवल ४ ही बताये हैं। यदि कहो ४ थे तो उसीपुराण

के उसी अध्याय के श्लोक ४० में "पञ्चवक्त्रः पितामहः" अर्थात् पांच मुख वाला ब्रह्मा उत्पन्न हुवा। इन में से कौन सत्य है ?॥

(१८) यदि आप जन्म ही पर वर्णव्यवस्था निर्भर करते हो तो बताइये कि निम्नलिखित महात्मा कौन वर्ण में पैदा हुये ? और आपके पूजनीय हैं वा नहीं ? व्यास, वसिष्ठ , विश्वामित्र, अगस्त्य, अजामिल, शठकोप, मतङ्ग। यथा—गणिकागर्भसम्भूतो वसिष्ठश्च महामुनिः । तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तत्र कारणम्॥ भावार्थ—मुनियों में श्रेष्ठ वसिष्ठजी गणिका (रंडी) के गर्भ से उत्पन्न हुए तपही से ब्राह्मण हुए उस का कारण केवल संस्कार है ।

(१९) युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव के मातापिता का पृथक् २ नाम बताओ ?

(२०) दशमासांस्तु तृप्यन्ति वराहमहिषामिषैः । शशकूर्मयोस्तु मांसेन मासानेकादशैव तु ॥ (मनु० अ० ३ श्लो० २७०) अर्थात् सूकर और भैंसे के मांस से दश महीने तक पितरों की तृप्ति होती है । खरगोश और कछुवे के मांस से बारह महीने तक। मनु भगवान् का यह श्लोक आप मानते हैं वा नहीं ?

(२१) भविष्यपुराण के अध्याय ४२ में लिखा है कि सूर्य्यनारायण अपने अङ्ग छिलाछुल्लू के दुरुस्त हुए और अपनी असली स्त्री को ढूंढने चले तो उस से घोड़ा होकर समागम किया ; उसने भी उनका वीर्य्य नाक में ले लिया जिससे अश्विनी कुमार उत्पन्न हुए । क्या यह कथा सत्य है ? यदि सत्य है तो बताइये जब सूर्य्यनारायण खराद्पर चढ़े थे और विश्वकर्मा उनके अङ्ग छील कर सुधारते थे और फिर घोड़े बनकर घोड़ी के पीछे उ-स्तर में.....कर रहे थे तब उस समय अमेरिका आदि द्वीपों में अन्धेरा था या उजेला था ?

(२२) भागवत के द्वादश स्कन्ध में लिखा है कि याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु के क्रोधित होने पर विद्या वमन (क़ै) कर दी और उनके साथियों ने तीतर बनकर चुनली कहिये विद्या क्या कोई ऐसी वस्तु है जो वमन हो सके और मनुष्य तीतर बन सकें ?

(२३) आप के माननीय महोपदेशक पं० ज्वाला प्रसाद जी ने दयानन्द ति० भा० पृ० ३३८ में शतपथ ब्रा० के एक वाक्य में " मूर्तिर्निर्माणाय " यह पद अपनी

ओर से स्वार्थ साधनार्थ मिलादिया है । क्या यही सनातन धर्म्मावलम्बियों की धर्म्मज्ञता है ?

(२४)"न स्त्री दुष्यतिजारेण ब्राह्मणो वेदकर्मणा" भावार्थ—स्त्री जारकर्म अर्थात् व्यभिचार कराने से दूषित नहीं होती क्योंकि जिस समय मासिक रजोधर्म्म होता है शुद्ध हो जाती है । जिस प्रकार ब्राह्मण वैदिक कर्म से शुद्ध हैं। क्या इस अत्रिस्मृति के वाक्य को प्रामाणिक मानते हो ? ऐसा मानते हुए भी नियोग निन्दा करोगे ?

(२५) "मातृयोनिं परित्यज्य विहरेत्सर्वयोनिषु" । वेदशास्त्रपुराणानि सामान्यगणिका इव ॥ एकैव शाम्भवी मुद्रा गुप्ता कुलवधूरिव॥ ज्ञानसंकलनी तंत्र० । भावार्थ—माता की योनि छोड़ कर सब की योनि में विहार करना चाहिये, वेद शास्त्र और पुराणादि रंडी के तुल्य हैं । अगर कोई है तो एक शांभवी मुद्रा गुप्तकुलवधू की तरह पर है । क्या यह तंत्रवाक्य भी आप को माननीय तथा वेदोक्त है ? इसी को सनातनी लोग अपना धर्म्म समझते हैं ?

(२६) व्यामोहाय चराचरस्य जगतश्चैते पुराणागमा-

स्तांतामेवहि देवतां परत्रिकां जल्पान्ति कल्पावधि ॥ सिद्धान्ते पुनरेकएव भगवान् विष्णुः समस्तागमा व्यापारेषु-विवेचनं व्यतिकरं नित्येषु निश्चीयते ॥ पद्मपुराणे० ॥ भावार्थ—पुराण मनुष्य को भ्रम में डालने वाले हैं। उन में अनेक देव ठहराये हैं। एक ईश्वर का निश्चय नहीं होता केवल एक भगवान् विष्णु पूज्य है। क्या अब भी ३३ करोड़ से हटकर एक ईश्वर की ही पूजा न मानोगे?

(२७) भागवत ६ स्कन्ध विष्णु के नाम माहात्म्य में लिखा है कि यदि कोई मनुष्य गुरु की स्त्री अथवा अपनी लड़की से भोग कर लेवे अथवा शराब पीना गो-मांस खाना चोरी करना, मित्र से घात करना यह सब पाप विष्णु का एकवार नाम लेने से दूर हो सक्ते हैं। क्या यही सनातन धर्म की सच्ची शिक्षा की पुस्तक है?

(२८) वाल्मीकि रामायण—बालकांड में जहां पुत्र कामेष्टि के लिये महाराज दशरथ जी ने यज्ञ किया उस में कौसल्याजीने एक रात्रि घोड़े के साथ शयन किया और होता अध्वर्यु तथा उद्गाता ने घोड़े के साथ जोड़ दिया और वही घोड़ा यज्ञ में काटा गया तथा अध्वर्यु आदि ब्राह्मणों ने एक जगह बांटकर खाया यह प्रकरण जो उस जगह आया है क्या आप अब इस समय में भी कोई उदाहरण बन सक्ते हो?

विज्ञापन ।

प्रगट हो कि निम्नानुसार उत्तम २ भजन पुस्तकें नक़द या वेल्यूपेबिल द्वारा मंगाने पर निम्न पतों से मिल सकती हैं:—

(१)	वासुदेव भजनबत्तीसी १ भाग हिन्दी	-)
(२)	तथा उर्दू	-)
(३)	वासुदेव भजनबत्तीसी २ भाग हिन्दी	-)॥
(४)	तथा उर्दू	-)॥
(५)	वासुदेव भजनसंग्रह हिन्दी १ भाग	-)
(६)	तथा उर्दू	-)
(७)	वासुदेव गज़लसंग्रह हिन्दी	)।
(८)	सुखसरोवर (गज़ल) उर्दू	)॥।
(९)	अबलाभजनचालीसी स्त्रियों के भजन हिन्दी	-)
(१०)	खंजरी भजनसंग्रह हिन्दी	)॥।
(११)	तथा उर्दू	)॥।
(१२)	भजन पचासा हिन्दी	-)
(१३)	तथा उर्दू	-)
(१४)	धर्म्मबलिदान उर्दू	-)।

(१५) तथा हिन्दी -)॥
(१६) कारनामा आर्य्यसमाज मुसद्दस हिन्दी)॥।
(१७) तथा उर्दू)॥।
(१८) वैदिकधर्म्म की सिदाकृत मुसद्दस हिन्दी उर्दू)।
(१९) चूरन की पुड़िया उर्दू मुसद्दस)।
२०) कन्याओं की अपील हिन्दी मुसद्दस)॥
(२१) स्त्रियों का परिवर्त्तन हिन्दी मुसद्दस)।
(२२) शिशुशिक्षा १, २, ३, ४ भाग बच्चों के पढ़ाने योग्य ॥)
(२३) नारीभूषण स्त्रियों के पढ़ने योग्य ।=)
(२४) अबलासन्ताप स्त्रियों की शोचनीय दशा ≡)
(२५) भारतीय शिष्टाचार ॥)
(२६) ईश, केन, कठ, तीनों उपनिषद् भाषाटीका ।=)॥
(२७) आनन्द सरोवर नवीन उर्दू भजन -)
(२८) थियेटर भजन उर्दू =)
(२९) भजनमाला मु० रामजी कृत उर्दू ।)
(३०) जगत भजन संग्रह -)
(३१) अबलासुधार भजन बत्तीसी ४ भाग स्त्रियों के गाने योग्य ≡)।

(३२) स्त्री संक्षिप्तजीवन हिन्दी =)

(३३) पौराणिकों से २८ प्रश्न हिन्दी)।

(३४) विधवाविलाप भजन)॥

(नोट) इनके अतिरिक्त और भी भजन पुस्तक तथा अन्य उपयोगी पुस्तक मिलेंगी ।

(१) पताः—पं० मुकन्दराम शर्म्मा
उपदेशक
आर्य्यसमाज (भरतपुर)

(२) पताः—पं० वासुदेव शर्म्मा
आर्य्य भजनोपदेशक
आर्य्यसमाज करनाल

ओ३म्

पुराण किसने बनाये ?

डा० भवानीलाल भारतीय
पुस्तकालय
व० १४०
तिथि
२४४०

श्रीयुत पं० लेखराम जी शर्म्मा कृत

बा० रावल मल जी पु० आर्य्य समाज

अजमेर ने प्रकाशित की

वैदिक यन्त्रालय अजमेर में छपी

आर्य्य सम्वत् १९६०८५२९९९

श्रीमद्दयानन्दाब्द १७

प्रथमावृत्ति ४००० प्रति

मूल्य प्रति पु० आध पैसा

विज्ञापन

—:o:—

नित्य कर्म्म विधि

द्विजातियों के लिये इस से बढ़कर और कोई पुस्तक उनको कल्याण दायक नहीं हो सकती दो आवृत्ति प्रकाशित हो चुकीं और प्रायः धर्म्मात्मा पुरुषों ने हाथों हाथ क्रय करके धर्म्मार्थ मेलों और बाज़ारों में बांट दीं अतः इसकी विशेष आवश्यकता और इस पर पाठकों की असीम अभिरुचि प्रतीत होने से इस तृतीयावृत्ति में २०००० छपाई गई हैं मूल्य भी उपकार दृष्टि से पूर्ववत एक ही पैसा)। रक्खा है जिन महाशयों को आवश्यकता हो निम्न लिखित पते से मँगालें।

मन्त्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा

प० उ० अवध

लखीमपुर

ओ३म्

पुराण किसने बनाये ?

हमारे भोले हिंदूभाई यह समझ बैठे हैं कि १८ पुराण *१८ उपपुराण व्यासजीने बनाये हैं जो कि पाराशरजी के

---

* १८—पुराणों के नाम—(१) मार्कण्डेय (२) भविष्य (३) भागवत (४) ब्रह्मवैवर्त्त (५) ब्रह्माण्ड (६) शिव (७) विष्णु (८) बाराह (९) लिंग (१०) पद्म (११) नारद (१२) कूर्म्म (१३) अग्नि (१४) मत्स्य (१५) ब्रह्म (१६) वामन (१७) स्कन्ध (१८) गरुड़ ॥१८—उपपुराणों के नाम (१) आदि (२) नृसिंह (३) वायु (४) शिवधर्म (५) दुर्वासा (६) कपिल (७) नारद (८) नन्दिकेश्वर (९) शूकर या उषनम् (१०) वरुण (११) साम्ब (१२) कलकी (१३) महेश्वर (१४) पद्म (१५) देव (१६) पाराशर (१७) मरीचि(१८) भास्कर ॥

पुत्र थे और जो महाराज युधिष्ठिर के समय में विद्यमान थे, जिस समय से कि वर्त्तमान कलियुग का आरम्भ होता है, जिसको आज तक ४९९४ बर्ष होते हैं, परन्तु पुराणों के पढ़ने से विदित होता है कि यह निश्चय उनका ठीक नहीं है, यह बात निम्न लिखित प्रमाणों से सिद्ध होजायगी, आशा है कि धर्म्मानुरागी लोग पक्षपात छोड़ कर इस पुस्तक को पढ़ेंगे ।

१–प्रमाण १८ पुराणों में बौद्ध को अवतार माना है, और जिन वाक्यों में यह कथन है उन में भूत काल पड़ा है भविष्य नहीं है, और जो उन का स्वरूप वर्णन है वह आज कलके जैनियों के पूज्यों अथवा गुरु लोगों से ठीक २ मिलता है, इससे स्पष्ट है कि जिस समय १८ पुराण बनाये गये थे उससे पूर्व बुद्धदेव हो चुके थे, जिस को प्रायः लोग बौद्धावतार कहते हैं,(शिव पु० पूर्वार्द्धखण्ड अध्याय ९ श्लोक ३से९ तक)

परन्तु इतिहास वेत्ताओं ने जयस्तम्भ अथवा स्तूपों और बौद्ध मंदिरों और आर्य्यावर्त्त, लंका, ब्रह्मा, चीन और तिब्बत की पुस्तकों और अजायब घरकी मूर्त्तियों से सिद्ध किया है कि बुद्ध विक्रमी संवत् से ६१४ वर्ष पूर्व हुये थे और ८० वर्ष

की आयु में उनका देहान्त होगया था जिसको आजतक २५६५ वर्ष होते हैं और व्यास जी को ४९९४ वर्ष हुये हैं अर्थात् बुद्ध २४२९ वर्ष व्यास जी से पीछे हुये हैं अतएव व्यासजी पुराणों के कर्त्ता नहीं हो सकते।

२—रामानुज विक्रम की १२ वीं शताब्दी में हुये थे, इसमें सब इतिहास वेत्ताओं की सम्मति है; और रामानुज ने वैष्णवमत चलाकर शंख, चक्र, गदा, पद्म से लोगों को चक्रांकित बनाया; परंतु वैष्णवमत का खण्डन लिंगपुराण में है।

शंखचक्रे तापयित्वा यस्य देहः प्रदह्यते।
स जीवन् कुणपस्त्याज्यः सर्वधर्म्मबहिष्कृतः॥१॥

अर्थः—जिस के शरीर पर तपाकर शंख, चक्र की ये छापें लगाई गई हैं वह जीतेजी मुर्दा और सर्व धर्म्मों से पतित के समान त्यागने योग्य है।

इससे स्पष्ट है कि रामानुज के मत के पीछे उसका खण्डन लिंगपुराण में हुआ।

"प्राप्तौ सत्यामिषेधः" अर्थात् जो वस्तु है, उसही का नि-

षेध होता है. और लिंगपुराण का नाम १८ पुराणों में है. रामानुज विक्रम की १२ वीं शताब्दी में हुये थे अर्थात् आजतक उनको हुये ७५१ वर्ष होते हैं और व्यास जी को जैसा ऊपर कहा है ४९९४ वर्ष हुये हैं. अतएव व्यास से रामानुज ४२४३ बर्ष पीछे भये; इसलिये व्यास लिंगपुराण के कर्त्ता नहीं हो सक्ते हैं ॥

३-"तौजुक जहांगीरी" नाम की पुस्तक में जहांगीर बादशाह लिखता है कि आलू, तम्बाकू, गोभी ये तीनों वस्तु मेरे पिता के समय अमेरिका से एक पादरी लाया था इस में सब इतिहास वेत्ताओं की सम्मति है परन्तु "ब्रह्मांड पुराण" में लिखा है कि ।

प्राप्ते कलियुगे घोरे सर्ववर्णाश्रमेतराः । तमालं भक्षितं येन स गच्छेन्नरकार्णवे ॥ २ ॥

अर्थः-घोर कलियुग में जो तम्बाकू पीता है वह नरक को जाता है. और "पद्म पुराण" में लिखा है ॥

धूम्रपानरतं विप्रं दानं कृत्वेति यो नरः। दातारो नरकं यान्ति ब्राह्मणो ग्रामशूकरः ॥ ३ ॥

अर्थः—जो मनुष्य तम्बाकू पीनेवाले ब्राह्मण को दान देता है वह नरक को जाता है और ब्राह्मण गांव के सुवर का जन्म लेता है।

हिन्दुओं की किसी धर्म्म पुस्तक में तम्बाकू का निषेध नहीं है. और इस शब्द को अमेरिका की भाषा में टोबाकू कहते हैं. गुरु नानक जी से लगा ९ बादशाही तक किसी ने इसका खण्डन नहीं किया क्योंकि तम्बाकू उनके समय में नहीं थी. जब जहाँगीर बादशाह के समय में आई और उसका प्रचार हुआ तो औरंगजेब बादशाह के समय में. १० वें बादशाह (गुरु) ने उस का निषेध किया. अतएव ब्रह्माण्ड और पद्म पुराण दोनों जहांगीर के पिता अकबर से पीछे बनाये गये हैं. और अकबर बादशाह का राज्य विक्रम के संवत् १६१३ से १६६२ तक अर्थात् सन् १५५६ से १६०५ ई० तक हुआ था, इसलिये ब्रह्माण्ड तथा पद्म पुराण व्यासजी के

बनाये नहीं हैं क्योंकि उनको हुये ४९९४ वर्ष व्यतीत हुये और इन पुराणों को बने (१९५१-१९९२)–२८९वर्ष हुये हैं।

४–शंकराचार्य्य रामानुज से पूर्व हुये क्योंकि शंकरभाष्य का खण्डन रामानुज ने किया है. सब विद्वान् जानते हैं कि शंकराचार्य्य सारे जगत् को माया और अपने आपको ब्रह्म कहते थे. सर्व हिन्दू लोग शंकर को महादेव का अवतार मानते हैं, और उनका होना निःसंदेह बुद्ध के पूर्व नहीं होसक्ता क्योंकि उन्हों ने बुद्ध का खण्डन किया है. अब पद्मपुराण में पार्वती जी के उत्तर में महादेव जी कहते हैं कि–

मायावादमसच्छास्त्रं प्रछन्नंबौद्धमेवच। मयव कथितं देवि कलौ ब्राह्मणरूपिणा ॥ ४ ॥

अर्थः–हे देवि कलियुग में मैं ने ब्राह्मण का रूप धर के मायावाद प्रवर्तक असच्छास्त्र (जो छिपाहुआ बौद्धमत है) रचा है. सो पद्मपुराण बुद्ध शंकर और रामानुज से पीछे बना है. व्यास जी का बनाया कदापि नहीं होसक्ता।

५–जगन्नाथ जी का मंदिर १२३१ विक्रमी सम्वत् में उ-

ड़ीसा के राजा अनंग भीमदेव ने बनाया था. उससे पूर्व नहीं था इसमें सब इतिहास वेत्ताओं की सम्मति है. और मंदिर पर भी यही सम्बत् लिखा है परंतु मंदिर का माहात्म्य स्कन्धपुराण में लिखा है. अतएव स्कन्धपुराण १२३१ सम्बत् से पीछे बना और वह व्यासकृत कदापि नहीं होसक्ता ॥

६–सर्व विद्वानों की सम्मति है कि १८ पुराण महाभारत के पीछे बनाये गये हैं और पुराणों में महाभारतका नाम है परन्तु महाभारत में पुराणों का नाम नहीं है।

और सब जानते हैं कि भागवत शुकदेव जी ने परीक्षित को सुनाई थी. इतिहास से विदित होता है कि कौरव पाण्डव के युद्ध के पश्चात् महाराजा युधिष्ठिर मही पर बैठे थे. उन्होंने ३६ वर्ष ८ मास २५ दिन राज्य किया. उनके मरने के पीछे राजा परीक्षित ने ६० वर्ष राज्य किया. भागवत में लिखा है कि परीक्षित के राज्य की समाप्ति पर अर्थात् महाभारत के ८६ वर्ष पीछे शुकदेव जी ने उन को भागवत सुनाई थी।

परन्तु महाभारत शान्तिपर्व अध्याय ३३२ व ३३३ से

विदित होता है कि जब युद्ध समाप्त हुआ और भीष्म जी के अन्त समय युधिष्ठिर उनसे उपदेश लेनेगये, तब उन्होंने शुकदेव जी का वर्णन किया और कहा कि बहुत काल हुआ कि वे मर गये हैं उनके मरने पर व्यासजी का शोकातुर होना भी लिखा है युधिष्ठिर इस प्रकार पूछते हैं कि मानो उन्हों ने देखा ही नहीं था, इस समय परीक्षित गर्भ में थे, जब परीक्षित के जन्म से पूर्वही शुकदेव जी मरगये थे तो उनका ९६ वर्ष पीछे भागवत सुनाना असम्भव है. और यह सच है जैसा कि देवी भागवत के टीकाकार ने लिखा है कि वास्तव में भागवत बोपदेव ने बनाई है और जब भागवत शुकदेव जी ने सुनाई नहीं और परीक्षित ने सुनी नहीं, जिन से व्यास बहुत पूर्व हो चुके थे तो सिद्ध हुआ कि व्यास ने उसको नहीं बनाया ॥

७—भागवत में लिखा है कि नारद जी व्याकुल होके बद्रिकाश्रम में विष्णु के पास गये, वहां वह तपस्या कर रह थे उन्होंने इन से समाचार पूछे. नारद जी ने सब वृत्तान्त कह सुनाया कि म्लेच्छों ने महादेव जी का मन्दिर तोड़ डाला और महादेव जी ज्ञानवापी अर्थात् कुए में डूबगये. अब इस बात

को सब विद्वान् जानते हैं कि यह वृत्तान्त जो नारद ने विष्णु को सुनाया औरंगज़ेब के समय में हुआ था जिस ने विक्रम के १७१३ से १७६४ तक राज्य किया था सो भागवत को बने हुए केवल १८७ वर्ष हुए हैं ॥

८—१८ पुराणों में सब ऋषि मुनियों और देवताओं की निन्दा लिखी हैं; और उन पर मिथ्या कलंक लगाये हैं. यथा ब्रह्मा जी को बेटी से, व्यभिचार का कलंक, कृष्ण जी को कुब्जा और राधा से, महादेव को ऋषियों की स्त्री से, विष्णु को जलन्धर की स्त्री वृन्दा से, इन्द्र को गौतम की स्त्री से, सूर्य को कुन्ती से, चन्द्रमा को अपने गुरु बृहस्पति की स्त्री तारा से, वायु देवता को माता उर्वशी से, बृहस्पति को अपने भाई की स्त्री उतत्थ्य से, विश्वामित्र को उर्वशी से, पाराशर को मच्छोदरी से, व्यास को दासी से, द्रोपदी को ५ पतियों से, देवियों को मांस भक्षण का, बामन को छल का, बलदेव को सुरापान का, राम को छल से बालि के मारने का इत्यादि कलंक ऋषि, मुनि, देवताओं पर लगाये पर बुद्ध पर कोई कलंक नहीं लगाया. उसने नास्तिक मत को यथातथ्य प्रकट किया है. इससे

भली भांति स्पष्ट है कि पुराणों के कर्त्ता बौद्ध मत वाले हैं न कि व्यास जी ।

९—व्यास के बनाये हुये वेदान्तसूत्र, मीमांसा की व्याख्या, योगभाष्य, जगत् विख्यात है. उन का धर्म्म भी सब विद्वानों पर प्रकट है, परन्तु यह १८ पुराण उन से अत्यन्त विरुद्ध है, इनका कोई सिद्धांन्त पूर्वोक्त शास्त्रों से नहीं मिलता जिससे अच्छे प्रकार ज्ञात होता है कि यह ग्रन्थ उन के बनाये हुये नहीं हैं।

१०—देवी भागवत में लिखा है कि आर्य्यावर्त्त के एक राजा का लड़का १ म्लेच्छ वेश्या (रंडी) पर आसक्त होकर धर्म्म से पतित होगया था. यह प्रत्यक्ष है कि जब मुसल्मान नहीं आये थे. तब मुसल्मान रंडियां भी न थीं. और जब मुसल्मानी रंडियां न थीं तब उनपर कोई आसक्त न होता था. इससे निश्चय । कि देवी भागवत मुसल्मानों के समय में बनी है और व्यासकृत नहीं. धर्म्म शास्त्र के अनुसार ब्राह्मण का काम पढ़ना और पढ़ाना है यथा मनुस्मृति में लिखा है ।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥५॥

अर्थः—जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वेदों को नहीं पढ़ता और अन्य २ ग्रन्थों में परिश्रम करता है वह जीतेजी कुटुम्बसहित शीघ्र शूद्र हो जाता और देखो अत्रि की स्मृति में क्या लिखा है।

वेदैर्विहीनाः प्रपठन्ति शास्त्रं शास्त्रेण हीनाश्च पुराणपाठाः। पुराणहीनाः कृषिणो भवन्ति भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति ॥ ६ ॥

अर्थः—वेद से हीन लोग शास्त्र पढ़ते हैं, शास्त्र से हीन पुराण बांचते है, पुराणों से हीन हल जोतते हैं और सब से पतित भागवत पुराण बांचते हैं।

जहांगीर के समय में गोस्वामि तुलसी दास जी मरे थे यथा।

"सम्वत सोलासौ असी असी गंग के तीर
श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी तज्यो शरीर"

जहांगीर सम्वत् १६६४ में मराथा. सो रामायण को बने (१६५१–१६८४) २६७ वर्ष हुये हैं. इस प्रकार सब पुराण नवीन हैं केवल वेद ही सनातन है ॥ इति ॥

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक २५०२
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक २५०२
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र